

# Sarvajanik Karyakram - Public Program

Date : 24th March 2002  
Place : New Delhi  
Type : Public Program  
Speech : Hindi & English  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 10
English	14 - 14
Marathi	-

### II Translation

English	15 - 16
Hindi	11 - 13
Marathi	-

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari



सत्य को खोजने वाले आप सभी साधकों को हमारा प्रणाम।

जिस चीज़ की आज हर जगह कमी है, वो है प्रेम। यही प्रेम जो है यही प्रभु की भक्ति है। बहुत लोग जिस बात को शब्द समझते हैं, लेकिन प्रेम एक शब्द नहीं है। प्यार एक शक्ति है और उसका भण्डार हमारे ही अंदर है। हम सभी उस प्यार से भरे हैं। कभी-कभी उसका अनुभव हमको आता है। हमको अनुभव आता है कभी कि जब हमारी माँ हमको दिखती है तो हमें अनुभव आता है। लेकिन वो क्षणिक है और कभी-कभी वो स्वार्थी होता है। पर जिस प्यार की मैं बात कर रही हूँ वो है आत्मा का अपना प्रादुर्भाव, आत्मा का अपना प्रकाश।

वो सबके अंदर है और स्थित है। उसके अंदर रंग, जाति-पाति कोई भेद नहीं। हर इंसान में है। जानवर में भी है। आपको आश्चर्य होगा कि जानवर प्यार बहुत समझते हैं। इंसान से भी ज्यादा जानवर समझते हैं प्यार क्या चीज़ है। तो हम लोग वाकई अगर अपनी उत्क्रान्ति में बढ़ रहे हैं, अपने Evolution में बढ़ रहे हैं तो हमारे अंदर प्यार का बड़ा जबरदस्त प्रकाश होना चाहिए। अगर प्यार आ जाए तो हमारे सारे प्रश्न जो हैं, जो मानव जाति के लिए पहाड़ जैसे खड़े हैं, एक दम खत्म हो जाएँ।

प्यार की हमने व्याख्याएँ अनेक की हैं पर उसकी कोई व्याख्या नहीं कर सकता क्योंकि वो एक सागर है। हमारे अंदर बसा हुआ एक महान सागर है और उसको भोगना भी हमारे ही नसीब में है। उसकी लहरें भी हमीं ज्ञात कर सकते हैं। हमारे ही लिए वह है। दूसरा चाहे उसे समझे या न समझे लेकिन हमारे लिए वो एक बहुत बड़ी अद्भुत शक्ति है। शक्ति कहने से लोग सोचते हैं कि कोई मानो प्रलयकारी चीज़ है। वो शान्ति देती है, वो आनंद देती है। वो सुख देती है और दुनिया के सारे प्रश्न समाप्त कर देगी अगर संसार इस प्यार में लिपट जाए। ये प्यार जो हमारे

साथ साल दर साल अंदर ही छिपा बैठा है, अंदर ही कुम्हला रहा है, उस पर अनेक आवरण हैं। सबसे बड़ा आवरण है कि हम अपने को बहुत बड़ी चीज़ समझते हैं। आप स्वयं प्यार हैं, इससे बढ़कर आप क्या हो सकते हैं? इससे आप कौन सी बड़ी हस्ति हो सकते हैं कि आप प्यार हैं और प्यार ही हैं और कुछ नहीं हैं! ऐसी आपमें शक्ति है जो सबको शान्त कर सके, सबको स्वच्छ कर सके, सबके अंदर आनंद भर सके। दुनिया भर के कोई से भी प्रश्न हों, कोई सा भी प्रश्न हो, उसके पीछे क्या है? द्वेष, नाराज़गी, अहंकार आदि बड़े-बड़े राक्षस बसे हैं और इसमें मनुष्य न जाने क्या मज़ा उठाता है, कौन सा उसे उत्साह प्राप्त होता है, पर वो समझ ही नहीं पाता अपने को कि मैं क्या हूँ। मेरे पास भण्डारा है जिस चीज़ का तो मैं क्यों दर-दर में, गली-गली में भीख माँगता फिरोँ? जो चीज़ मेरे अंदर में उमड़ रही है उसको छोड़कर क्यों मैं ऐसी-ऐसी चीज़ों के पीछे दौड़ता हूँ?

ग़लत दिमाग और ग़लत विचारधारा से ऐसा होता है। बहुत से लोगों को लगता है कि दुनिया में ग़र आपके पास पैसा हो तो आप बहुत बड़े आदमी हो। मैंने आज तक किसी भी पैसे वाले को सुखी नहीं देखा। मेरे पास जितने पैसे वाले आते हैं उनकी शक्ल से ही पता चल जाता है कि ये कोई बड़े भारी दुःखी आदमी हैं और ये पता चलता है कि ये कोई करोड़पति हैं। इसके

अंदर आखिर इतना पैसा है, इतनी चीज़ें हैं तो भी आखिर ये दुःखी क्यों है? अब पता चला कि इन पर दुनियाँ भर की आफतें आई, दुनियाँ भर की परेशानियाँ आई।

कुछ समझ में नहीं आता कि इतना पैसा होते हुए भी उन पर इतनी आफतें क्यों आई हैं। सो आजकल के ज़माने में नई-नई आफतें आई हैं। पहले नहीं होती थीं इतनी, जितनी आज हैं। ग़र आपके पास बहुत पैसा है तो न जाने कितने चोर आपके पास दौड़ेंगे, न जाने कितने ठग लग जाएंगे, न जाने कितने छुरा लेकर आपके पीछे दौड़ेंगे। न जाने क्या-क्या आफतें होंगी। सो पैसे से आदमी सुखी हो नहीं सकता। आप देख लीजिए क्योंकि पैसे होने पर भी मनुष्य की लालच खत्म नहीं होती। उसको लगता है कि आज ये है तो कल वो होना चाहिए। वो है, तो वो होना चाहिए। उसकी लालच खत्म ही नहीं होती उस पैसे से क्योंकि उस पैसे में समाधान देने की शक्ति नहीं। ग़र आपके पास पैसा है तो समाधान इसमें है कि वो किसी को दे दें। गरीबों को बाँट दें, उनका दुःख हल्का करें। तब आपको समाधान मिलेगा। नहीं तो पैसे का कोई अर्थ नहीं। जो पैसा आप बाँट नहीं सकते वो पैसा लक्ष्मी हो ही नहीं सकता। लक्ष्मी तत्व में मैंने आपसे बताया है एक हाथ से देना और दूसरे हाथ से आश्रय। तो दूसरों को ग़र आप आश्रय दे रहे हैं, अपने पैसे के साथ, तो आपको आनंद आएगा। ग़र आप



दुनिया की भलाई कर रहे हैं अपने पैसे से तो उस पैसे से आपको आनंद आएगा। गर वही पैसे आप संभाल-संभाल कर रखें, उसका पहाड़ बनाएँ और उस पर बैठ जाएँ, कोई भी आपके शक्ल में उसकी खुशी नज़र नहीं आएगी। ऐसे लोगों को बहुत लोग जानते हैं और हँसते हैं उन पर। देखते हैं कि ये आदमी इस तरह से जा रहा है। ये कर रहा है। पर अब करें क्या? जब तक उसको अपनी अक्ल नहीं आएगी वो कभी समझेगा ही नहीं। वो समझलेगा नहीं और उस पैसे का आनंद नहीं उठाएगा। आज पैसा आया तो कोई और नई चीज़ में चला गया। और पैसा आया तो वो और किसी आदत में चला गया। मनुष्य के पास पैसा आते ही न जाने वो बाहर की गन्दी-गन्दी बातें सीखने लग जाता है। ऐसी कोई चीज़ होगी ना पैसे में जिससे आदमी खराब ही क्यों सीखता है? शराब क्यों पीता है? औरतों के पीछे क्यों भागता है? पैसा आते ही साथ ऐसी कौन सी बात होती है कि वह बिगड़ता ही जाता है, बिगड़ता ही जाता है, बिगड़ता ही जाता है। या तो वह जेल में चला जाएगा, या सर्वनाश हो जाएगा। यही पैसा जो आपको शोभा दे सकता है वह आपके सर्वनाश का कारण बन जाता है। प्यार के संगति से आप यही सोचते रहते हैं कि किसको क्या दिया जाए। उसको किस तरह से सुशोभित किया जाए? उसको किस तरह से प्यार जताया जाए? और बड़े-बड़े सुन्दर तरीके

से होता है ऐसे सुन्दर तरीके होते हैं पैसे देने के। लेने के नहीं, देने के और उसमें कभी-कभी इतना आनंद आता है कि उतना आनंद लाखों खर्चने से भी नहीं आता। ये तो बात है कि मनुष्य कभी-कभी सिर्फ अपनी शोहरत के लिए पैसे देता है। ये कोई खास बात नहीं। पर तो भी वो बेहतर है बनिस्बत इसके कि सारा पैसा अपने पास पड़ा रहे।

अब दूसरी बात है इंसान को शौक है कि वो सत्ता कमाए। सत्ता क्यों कमाए? सत्ता में क्या है? आपकी अपने ऊपर तो सत्ता है नहीं। दुनिया भर में आप सत्ता करना चाहते हैं! माने हमारी बड़ी भारी Position हो जाए। सत्ता हो जाए, सब लोग हमारे को सैल्यूट मारें। इसमें कौन सा सुख है? अंत में यही लोग जब सत्ता से उतरते हैं तो कोई उनकी ओर देखता भी नहीं। कोई उनको पूछता भी नहीं और वो बड़े दुःखी हो जाते हैं कि एक जमाने में तो मेरे सामने दौड़ते थे अब मेरे पीछे भी नहीं दौड़ते। ये ऐसी कौन सी बात है। सत्ता के पीछे में लोग जाते हैं। एक साहब से मैंने पूछा तुम पैसा क्यों खाते हो? तुमने सत्ता पाई है तो उससे कुछ अच्छा काम करो। कुछ लोगों की मदद करो। तो तुम सत्ता में आकर के ऐसे गलत काम क्यों कर रहे हो? पैसे क्यों कमा रहे हो? झूठ क्यों बोलते हो? तो उन्होंने कहा मैंने इतनी लागत लगाई, वो तो मुझे निकालनी है। तो मैंने कहा, "तुमने ये लागत लगाई क्यों?"

इसलिए क्योंकि आप जीतने वाले नहीं थे। आप अगर ऐसे ही खड़े हो जाएँ तो कोई नहीं वोट देता। तो इसलिए आपने पैसे लगाए कि इस पैसे से मैं जीत जाऊँ। तो जब तक आप लोगों को पैसा देते रहें तब-तक लोग समझेंगे कि आप किसी काम के हैं। या कोई गलत काम करने लग जाएं तो लोग खुश होंगे। ये वास्तविक बात है। मैं कोई नई बात नहीं कह रही हूँ। ये रोज़मर्रा हम देखते हैं। पर वही आदमी, जब उसकी सत्ता खत्म हो जाती है तो कोई उसे पूछता भी नहीं। कोई उसे देखता भी नहीं। कोई उसे जानता भी नहीं। कोई उसका मित्र भी नहीं होता। तो क्या फायदा। सारी जिन्दगी अपनी सत्ता में फँसे रहे। सारी जिन्दगी अपनी सत्ता के घमण्ड में फँसे रहे और आज आप कहाँ हैं? और अब आपको क्या मिला? ये मैं नहीं कहती कि आखिरी दम तक हर आदमी को उसके प्यार की शक्ति से कुछ लाभ होता ही है पर सबसे बड़ी चीज़ है जो आदमी प्रेम करता है और उसके बाद में उसके प्यार की जिसके ऊपर छाया पड़ती है, जिसने उसका उपयोग किया हो, जिसने भी उसका दर्शन किया हो, जिसने भी उसका जलवा देखा है, वो पुश्त-दर-पुश्त याद रखा जाता है। याद ही की बात नहीं पर वो ही जलवा दूसरों में भी आता है और दूसरे भी अच्छा काम करने लग जाते हैं और दूसरे भी उसी की तरह होने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे ही आदमियों का नाम

आज अमर हो गया है। नहीं तो बेकार के लोगों को कौन जानता है। बेकार के, जिन्होंने अपनी सत्ता में सबको तकलीफ दी, गलत-गलत काम करे। थोड़े ही दिन में उन पर भी लोग उंगलियाँ उठाने लग जाएँगे। इस तरह के लोग संसार में, मैं मानती हूँ, बहुत कम हैं। इसलिए क्योंकि हम लोग बहुत चालाक हैं। अपने को बहुत होशियार समझते हैं।

तीसरे तरह के लोग होते हैं जो चोरी चकारी करते हैं। चकमा देते हैं, पैसा बनाते हैं। इस तरह की झूठी बातें करते हैं। उनका क्या हाल होता है वो मुझे बताने की कोई जरूरत नहीं है। तो ये सब करने की जरूरत क्या है? किसके लिए आप कर रहे हैं? कोई कहेगा कि हमारे बाल-बच्चों के लिए कर रहे हैं। कल यही बाल-बच्चे आपको जूते लगाएँगे कि नहीं? आपका मान क्यों करेंगे? आपमें कोई चरित्र नहीं तो आपका मान कौन करेगा? आपको कौन देखेगा? ये समझने की बात है कि ये सब व्यर्थ की लालसाएँ हैं और ये आपको आपसे दूर रखती हैं। आप अपने प्यार को समझिये। आपकी जिन्दगी में कोई ऐसे इंसान आए जिन्होंने आपको प्यार दिया हो, उनको आप जिन्दगी भर नहीं भूल सकते चाहे उन्होंने पैसा नहीं दिया; कुछ नहीं दिया। पर उनका प्यार, प्यार जरूर याद रहेगा और आप याद करेंगे कि इन्होंने मेरी ओर बहुत प्यार से देखा। मेरी ओर बहुत प्यार का हाथ बढ़ाया था। ये समझने की



बात है कि हम रोज़ देखते हैं। कोई नई बात तो नहीं, कोई इतिहास की बात तो नहीं, कि कोई किताबों में लिखी बात नहीं। कुछ बाईबल पढ़ने की ज़रूरत नहीं, कुरान को जानने की ज़रूरत नहीं। ये रोज़ की बात है। जब ये बात हम देख रहे हैं तो हम किसलिए तलवार लेकर निकले हैं? ऐसे हमारे अंदर जो बहुत सारी विकृतियाँ हैं वो इस तरह से बाहर आती हैं। मैं कहूँगी कि ईमानदारी की बात है कि कितने लोग हमारे देश में, जैसे कोई छूत की बीमारी लग रही है, पैसा खाते हैं। किसी से पूछो, “ये कौन हैं?” ये पैसा खाते हैं। “वो कौन हैं?” वो पैसा खाते हैं। जिसको देखो वो ही पैसा खाता है। और कोई उनका वर्णन ही नहीं। ये ही बताया जाता है कि ये पैसा खा रहा है, वो पैसा खा रहा है। अरे खाना वाना नहीं खाते, पैसा ही खाते हैं? ऐसे लोगों को भी आप देखिए कि अंत में उनका क्या हाल होता है। एक बार हम ऐसे ही गए थे। वहाँ बहुत भीड़ थी तो कुछ लोग थे बेचारे सीधे-साधे। उन्होंने नाक पर ऐसे हाथ रख लिया। मुँह पर हाथ रख लिया। बात क्या है? वो बोले, ये साथ जा रहे हैं न, इन्होंने बहुत देश का पैसा खाया है। मैंने कहा आप लोगों ने नाक मुँह क्यों बंद करे हैं। कहने लगे कि इनको सूँघने से हम लोग भी वैसे ही हो जाएँगे। ऐसा हमें डर लगता है। अरे ये बात बड़ी धिनौनी है।

हमारे संस्कृति के हिसाब से ये बड़ी

धिनौनी बात है। ऐसा धिनौना काम करना हमारे संस्कृति में मान्य नहीं है। हमारी संस्कृति बड़ी ऊँची है। भारतीय संस्कृति एक दिन सारे संसार का मार्गदर्शन कर सकती है पर हमी अपनी संस्कृति को छोड़ कर के बैठे हैं! हर तरह से लज्जाशील रहना चाहिए। ऐसे बताया जाता है कि औरतों को लज्जाशील रहना चाहिए। ऐसा है कि बाहर से सीख करके लोग ऐसे कपड़े पहनने लग गए कि जिसमें लज्जा को तिलांजली दे दी गई। लज्जा-वज्जा कुछ नहीं। अरे भाई देवी के लिए कहा गया है “लज्जारूपेण संस्थिता।” आपके अंदर अगर देवत्व है तो आप लज्जाशील रहेंगे। आप बेशरम जैसे कपड़े नहीं पहनेंगे। आप बेशरम जैसे नहीं घूमेंगे। और अगर घूमते हैं आप तो आप में देवत्व नहीं है। तो किसी ने कहा कि हनुमान जी तो नहीं कपड़े पहनते हैं। तो क्या आप हनुमान जी हैं? ये भी कोई Explanation है कि हनुमान जी नहीं पहनते तो हम भी नहीं पहनते। अब हनुमान जी को क्या पहनने की ज़रूरत थी? भई तुम लोग इंसान हो और तुम इस देश के वासी हो। तुमको क्या ज़रूरत है कि हनुमान जी जैसे हम कपड़े नहीं पहनेंगे। बाकी देखिए तो सब लोग पहनते हैं। ऐसा कोई है जो कपड़े ठीक से नहीं पहनता तो हनुमान जी का उदाहरण ले लिया। महावीर जी का, महावीर जी एक बार अपने ही प्रांगण में ध्यान कर रहे थे तो श्री कृष्ण जी ने उनकी परीक्षा लेनी चाही। तो उनसे जा

कर कहा श्री कृष्ण जी ने कि "तुम मुझे अपना कपड़ा दे दो।" और उनका कपड़ा आधा फट गया था, तो भी वो ध्यान में थे। "ये आधा भी हमको दे दो।" उन्होंने दे दिया। और फिर चले गए अपने शयन ग्रह में, अपने सोने की जगह में, जा कर अपने कपड़े-वपड़े बदल लिए। वो एक छोटा सा बच्चा बन के आए थे। वो ठीक है। वो चले गए। अब देखिए कि उनके Statues बना रहे हैं। इतने गंदे लोग हैं, इनको कोई शर्म नहीं। इस तरह से महावीर जी का अपमान करते हैं। ये तो हमारे यहाँ गलत बात है कि जो गलत चीज़ है, उसी को ले करके चलेंगे। उसको फट से पकड़ लेंगे और उसी को ले कर के दिखाएँगे, सौ बार। मैं कहती हूँ कि कुछ अकल रखो। ऐसे कहीं होता है? बिल्कुल शुरुआत में बताते हैं कि आदम और हव्वा। उसमें से हव्वा को जब पता चला उसको जब अनुभूति हुई कि हमें आगे का जानना है। वो जो साँप था वो स्वयं साक्षात् कुण्डलिनी थी। उसने जब बताया कि तुमको ज्ञान का फल प्राप्त करना है तब उसी वक्त उनको ये ज्ञान हुआ कि हम ऐसे नंगे घूम नहीं सकते हैं जानवरों जैसे। हमें कुछ पहनना चाहिए। फौरन उन्होंने पत्तियों से अपने कपड़े बनाये और पहन लिए। सर्वप्रथम ये ज्ञान होना चाहिए कि हम इंसान हैं जानवर नहीं। हम जानवर जैसे नहीं रह सकते। हालाँकि कुछ-कुछ जानवर इंसान से भी अच्छे होते हैं मैं मानती हूँ पर उनको भी

लज्जा होती है। पर इंसान में लज्जा न हो और बड़े अपने को समझते हैं, हम बड़े Modern हैं और ये हैं वो हैं। अरे भई अगर लज्जा नहीं है तो देवी तत्व से तो आप हट गए। देवी तत्व में कहा जाता है कि "लज्जारूपेण संस्थिता।" इसलिए कभी-कभी उसका अतिक्रमण भी कर देते हैं। होता है कभी-कभी। वो नहीं करना चाहिए। अब आप घूँघट निकालो, बुर्का पहनो। इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। जो चीज़ लज्जाशील है वो उसकी आँखों में है। उसको ज़रूरी नहीं कि ये ढोंगपना करे। इसकी कोई ज़रूरत नहीं। पर मनुष्य में भी अतिक्रमण कर जाए। मनुष्य में क्या है कि किस तरह से वो एक दम से इस तरह से विक्षिप्त हो जाता है? कुछ बताना समझ में नहीं आता कि क्या बताएँ। कुछ भी चीज़ ले लो, उसको विक्षिप्त कर देना। ठीक है स्त्री में लज्जा होना। और लज्जा उसके अंदर की चीज़ है उसके अंदर में स्थित है ये देवी तत्व-हरेक स्त्री में, हरेक पुरुष में। लज्जा एक देवी तत्व है। ऐसा कहते ही साथ वो गए और चलो अब पर्दे लगाओ, ये करो वो करो, घूँघट निकालो। अरे भई ये अंदर की चीज़ है। स्त्री के अंदर की चीज़ है। लज्जारूपेण संस्थिता। और उसमें अनेक बातें निहित हैं। अब जैसे छोटी सी बात है अपने दोनों कंधों में दो चक्र हैं। Right में 'श्री' चक्र है और Left में 'ललिता' चक्र है। ये हम सिद्ध कर सकते हैं। आप उसको खोले फिरोगे तो नुकसान होगा आपको।



होना ही है। किस तरह का नुकसान होगा वो मैं बताना नहीं चाहती। कभी विस्तारपूर्वक बताऊँगी, पर क्यों ऐसा करते हो? क्या जरूरत है? पर पुरुष में जरूरी नहीं। पुरुष में ये बात नहीं। उनमें ये दोनों चक्र बिल्कुल पूर्णतया खुले हुए हैं पर स्त्री के लिए क्योंकि वह शक्तिशाली है उसके लिए जरूरी है उसे ढकना। अब ये समझने की बात है इसमें कोई दकियानूसीपने की बात नहीं। जिस चीज़ में आप दकियानूसी हैं वो बेवकूफी है। लेकिन जिस चीज़ में आप सतर्क हैं वो चीज़ ठीक है। सो सबसे बड़ी चीज़ है कि प्यार में मनुष्य एकदम सतर्क होता है। कहीं कुछ हो गया उसे पता चल जाता है। कहीं कुछ हो गया उसे समझ में आ जाता है। कहीं कुछ बात हो जाती है वो परेशान। कहीं कोई औरत है, बेचारी उसने आत्महत्या कर ली। तो एक मुझे लड़की मिली। मैंने कहा तुम क्यों परेशान हो। कहने लगी उसने आत्महत्या क्यों की। छोटी सी लड़की 10 साल की। मैंने कहा तुमसे किसने बताया। किसी ने बताया नहीं मैंने अखबार में पढ़ा कि उसने आत्महत्या कर ली। अब ये जो खिंचाव किसी अनभिज्ञ इंसान से, unknown आदमी से हो, ये क्या बात है। और छोटे बच्चों में ये बहुत होता है। बात ये है—बच्चे जो हैं बहुत ही ज्यादा निष्पाप, innocent. निष्पापिता में, स्वच्छता में उनको खसोटता है, उनको दिखता है। गलत काम ये नहीं होना चाहिए। वो रूठेंगे आपसे, वो आपसे

शरमाएँगे। लेकिन अंदर से प्यार। प्यार ही उनका जीवन और प्यार उनके जीवन का सार। दूसरा उनको किसी चीज़ से कोई नहीं। आप उनको कोई और चीज़ दे दीजिए वो समझ नहीं पाएँगे। इसमें क्या विशेषता है। पर उनकी माँ को हटा लीजिए या उनकी नानी से हटा लीजिए तो बड़ा बुरा हाल हो जाएगा। ये किस वजह से होता है। ये इतना छोटा सा बच्चा ये चीज़ कैसे जानता है और हम लोग क्यों नहीं जान पाते? हम लोग ये क्यों नहीं जान पाते कि ये चीज़ इस बच्चे में इतनी प्रगल्भ है, इतनी developed है और हम लोग जो अपने को बड़े भारी विद्वान समझते हैं हममें क्यों नहीं? क्योंकि विद्वता जो है वो अंधेरे में। हम विद्वान हैं अंधेरे के, उजाले के नहीं। हमें ये नहीं मालूम कि कौन सी चीज़ हमें आह्लादित करती है। कौन सी चीज़ हमें आडोलित करती है। कौन सी चीज़ से हमें सुख प्राप्त होता है और दूसरों को। समाज को किस चीज़ से सुख मिलेगा इस चीज़ को हम समझते नहीं। हम लोगों ने अपनी बना ली हैं प्रणालियां कि भाई ऐसे अवदान पहनो तो सुख मिलेगा।

अब बड़े आदमी हो गए, गले में, कण्ठ में मालाएँ पहन के घूमो, ये करो वो करो। तो हम बहुत बड़े आदमी हो गए। हमारी दुनिया पूजा करेगी। हमें बहुत बड़ा वो समझेगी। लेकिन ये अपने से भी धोखा देना है और लोगों को भी धोखा देना है। ग़र आपको अपने को धोखा देना है तो देते



रहिए। अंत में उसका फल आप पाइयेगा। दुनिया समझ जाएगी कि आप कितने गहरे पानी में हैं। सबसे बड़ी चीज़ है कि जो आपका धन आपके अंदर प्यार का सागर है उसको आप प्राप्त कीजिए।

सहजयोग का यही कार्य है। सहजयोग आपकी कुण्डलिनी जागृत करता है। कुण्डलिनी आपके जीवन का पूरा छाप है। उसको उठा करके और सहस्रार में बैठाना। सहस्रार आडोलित हो जाता है, प्रकाशित हो जाता है और उससे आपको आनंद के सागर का अनुभव होता है। आप देखते हैं कि आप आनंद का सागर हो गए। फिर आप देखते हैं कि आप प्यार का सागर हो गए। आपको आश्चर्य होता है कि आप तो ऐसे कभी थे नहीं। आप ऐसे कैसे हो गए। अरे आप थे। आप को मालुम नहीं था। अब कुण्डलिनी ने आपका संबंध कर दिया। अब ये देखिए। इसका संबंध ये जो चारों ओर फैली हुई बिजली की शक्ति है उससे हो गया। अब देखने को तो इतना छोटा सा लग रहा है। पर इसका संबंध होते ही साथ बिजली क्रियान्वित हो गई। ऐसे ही कुण्डलिनी का संबंध होते ही आप कार्यान्वित हो जाते हैं। जिन सहजयोगियों ने सहज को पाया है। मैं कहूँगी इसको सहज से पाया है। और पाया क्या है, वो प्यार का सागर जो हमारे मस्तिष्क में, जो हमारे सहस्रार में क्या कहना चाहिए, दबा हुआ है वो आज खुल गया। उसका संबंध हमारा हो गया और वो बह गया। उसके प्रवाह में

हम बह गए। दुनिया भर की चीज़ें होती ही रहती हैं। चलती ही रहती हैं। उसकी गर ऐसी बात, किस बात से आपको आनंद आएगा ये देखना चाहिए। जब आप आनंद का अनुभव करेंगे, उसी से आनंद आएगा। कोई कहे कि मुझे बड़ा आनंद आ रहा है तो ये कोई कहने की बात तो नहीं है ये तो होने की बात है। पर जब ये घटित होता है तो कुछ कहना नहीं पड़ता। अपने आप ही दिखाई देता है। आपका जीवन ही प्रज्ज्वलित हो जाता है और आपके जीवन से हजारों लोग उसे प्राप्त करते हैं। आनंद प्राप्त करते हैं। आज सहजयोग में आप लोग आए और यहाँ आकर आपने भी उस चीज़ को पा लिया। आपका भी संबंध हो गया Connection हो गया। अब इसको जमाए रखो और उसका आनंद उठाओ। उसके आगे बाकी सब चीज़ें तुच्छ हैं। कोई लिखेगा माँ अभी मैं पार तो हो गया पर मुझे खुशी ही नहीं होती। ये तो ऐसा ही है कि Connection कुछ कम है। माँ मैं पार तो हो गया पर अभी मेरे घर में पैसा नहीं आया। इसका मतलब आप पार नहीं हुए। ऐसे बकवास जितने लोग करते हैं उनकी जो चिड़ियाँ आती हैं वो मैं बंद करके रखती हूँ और उनसे कहती हूँ कि तुम ज़रा थोड़ा और अभी try करो। जब आदमी पार हो जाता है तो वो बदल ही जाता है। उसकी इन्सानी मोहब्बत प्यार में बदल जाती है। वो एक दूसरा ही प्राणी हो जाता है। उनकी शक्ल ही बदल जाती है। कुछ

देखते ही बनता है। अभी एक साहब आये थे इंग्लैण्ड से, बड़े मरीज, बीमार, मरीगल्ले लग रहे थे। अभी आए मैंने पहचाना नहीं। आपने पहचाना नहीं। मैंने नहीं पहचाना भाई, तुम कौन हो? मैं वो हूँ। और कह कर पैर पर गिर गए। मेरे भी आँखों से आँसू आ गए। जो आदमी अपने मरने के दिन गिन रहा था आज उसका ये हाल हो गया।

और ये अहंकार की जो बीमारी है इसका तो नाम लेते ही गला सूख जाता है। ऐसा ये पागलपन है। ऐसा ये स्वयं को नष्ट करने वाला एक राक्षस है जो कि आपको एकदम खत्म कर देगा और आप उसको Justify करते रहते हैं। उसको आप कहते हैं ठीक है ठीक है। इसलिए मैंने किया उसलिए मैंने किया। किस लिए किया हो सो सिर्फ तुम्हारे अंदर अहंकार भरा है। अहंकार इंसान में भरना तो इतना खराब है कि उससे खराब तो मैं सोचती हूँ कि कोई चीज़ हो ही नहीं सकती। मैं कोई विशेष हूँ मेरा ऐसा है। और फिर उससे जब वो देखता है कि मुझे कुछ लाभ नहीं हुआ। लोग मुझे देखते भी नहीं। कोई मुझे पूछता भी नहीं। तब वो ठीक होते हैं। फायदा क्या? पूरी तरह से आपने अपना नुकसान कर लिया। उसके बाद आप अहंकार, इसको कहते हैं ठीक करना। हर एक चीज़ से अहंकार चढ़ता है। पैसा हो तो, सत्ता हो तो, और भी कोई चीज़ हो तो अहंकार चढ़ता है। और फिर उसी अहंकार

से आप गलत रास्ते पे जाते हैं। स्वयं को नष्ट करने का Self destructive काम करते हैं। तो क्या फायदा ऐसे अहंकार से कि जिससे आप अपने ही को नष्ट करते हैं? उसका बोलना अलग, चलना अलग, ढाल अलग। और उस अहंकार में वो किसी से मिलते नहीं। किसी से उनका पटता नहीं। वो अपने अलग रहते हैं। मुझे ये आदमी पसंद नहीं। मुझे वो आदमी पसंद नहीं। वो कभी भी किसी भी तरह से सम्मिलित नहीं होते। कभी भी वो दूसरों की बात नहीं सुनते। अपनी सुनाते रहते हैं। ऐसे अहंकारी आदमी का जीवन माने मरने से भी बदतर। एक साहब मैं, जानती थी, बड़े अहंकारी थे। बहुत बड़े आदमी थे। पार्लियामेंट में थे जाने कहाँ-कहाँ। पर जब वे मरे हैं तो चार आदमी उनको उठाने के लिए नहीं मिले। चार आदमी। तो उनको किराए पर चार आदमी बुलाने पड़े कि भाई इनकी लाश को उठाओ। ऐसे अहंकार से क्या फायदा कि मरते वक्त वहाँ पर चार आदमी भी नहीं थे। और कोई रिश्तेदार भी नहीं। कोई मिलने वाला भी नहीं। कोई कहने वाला भी नहीं। इंसान से मानो उठ गए वो। और उनका मानो कुत्ता था वो भी नहीं वहाँ खड़ा हुआ। मैंने कहा भई हद हो गई इस आदमी ने ऐसा कौन सा पाप कर्म किया सिवाय इसके कि उसमें बहुत अहंकार था। इस अहंकार में उनकी यह दशा हो गई कि मरते वक्त उनको कोई उठाने वाला भी नहीं!

# HINDI TRANSLATION

## (English Talk)

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

मैं प्रेम के विषय में बहुत कुछ बता चुकी हूँ परन्तु मुझे ये सब हिन्दी में बताना पड़ा। परन्तु प्रेम के विषय की अभिव्यक्ति हिन्दी में ही बेहतर होती है। आप देखते हैं कि प्रेम करने की क्षमता भारत में बहुत अधिक है। अपने प्रेम के सहारे लोग जीवन बिता लेते हैं। लोग एक दूसरे को अपने प्रेम के माध्यम से समझते हैं। निःसन्देह पश्चिमी संस्कृति में रंगे भारतीयों में इस गुण का अभाव है। पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित भारतीय के मन में तो अपने देश के लिए भी प्रेम नहीं है। अपने देश को प्रेम करने वाले बहुत से लोग हैं। हमारे यहाँ भी ऐसे बहुत से लोग हैं। कुल मिलाकर भारतीय लोग अत्यन्त प्रेममय हैं। आप यदि किसी के घर पर जाएं तो वो आपसे प्रेम करते हैं आपको खाना आदि खिलाकर वो बहुत प्रसन्न होते हैं। घर में यदि कुछ उपलब्ध न हो तो वो तुरन्त बाहर से लाते हैं। वे अपने मित्रों को बताते हैं, टेलिफोन करते हैं। अतिथि की वो सेवा करते हैं। यह प्रेम-भाव पूरे विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं है। कहीं भी नहीं। अतिथि की सेवा में प्रायः लोगों को विश्वास ही नहीं है। अन्य देशों में कहीं भी आप जाएं, लोगों का नज़रिया अत्यन्त लेखे जोखे वाला होता है कि इससे

क्या लाभ होगा।

भारत में आप यदि किसी निर्धन के घर में भी जाएंगे तो वो आपसे बैठने के लिए कहेगा, दूध आदि पेय आपको पेश करेगा। उनके हृदय बहुत विशाल हैं। आजकल हम लोग भी बहुत धन लोलुप होते चले जा रहे हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। इस देश में बहुत अधिक धन नहीं है इसीलिए लोगों में प्रेम करने की क्षमता बनी हुई है। इस बात पर आपने ध्यान दिया होगा। आप सब लोग आजकल यहाँ हैं, आप देखते हैं कि भारतीय कितने प्रेममय हैं। परन्तु आधुनिक भारतीय ऐसे नहीं है। आधुनिक भारतीय तो आप लोगों का मुकाबला करते हैं। मैं उनके विषय में कुछ नहीं कह सकती। परन्तु पारंपरिक लोग, भारतीय संस्कृति में विश्वास करने वाले वृद्ध लोग अत्यन्त प्रेममय हैं। यही कारण है कि तीन सौ वर्ष के अंग्रेजी साम्राज्य के बाद भी हम जीवित हैं और हमने अपनी संस्कृति को बनाया हुआ है। देश के प्रति उनके प्रेम के कारण ही ये सब संभव है। ऐसे प्रेममय लोग आपको कहीं अन्य नहीं मिलेंगे। किसी गाँव में या कहीं अन्यत्र आप जाएं तो लोग आपकी सहायता करने का प्रयत्न करेंगे। आपके विदेशी होने के कारण वे आपका



सम्मान करेंगे। विदेशी या विदेश से आया व्यक्ति हमारे लिए सम्मानजनक होता है। आपको पुकारने या निमंत्रित करने के उनके तौर-तरीके अत्यन्त सम्मानजनक होंगे। विदेशियों के प्रति यहाँ के लोग अत्यन्त सम्मान दर्शाते हैं।

परन्तु विदेशों में किसी अन्य देश से आए हुए व्यक्ति को बहुत तुच्छ माना जाता है। आप यदि विदेशी हैं तो आप उनकी दृष्टि में बहुत तुच्छ हैं। ओह, विदेशी हैं, ठीक है! परन्तु यहाँ पर विदेशियों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं होता। यहाँ पर लोग आपकी सराहना करेंगे, आपको समझेंगे और आपको प्रेम करेंगे। अपने प्रेम



को वो अभिव्यक्त करेंगे। मैंने कभी किसी सहजयोगी को विदेश में अपमानित होते हुए या कष्ट उठाते हुए नहीं देखा। वे ऐसा नहीं करते। एक बार ऐसा हुआ कि चोरी हो गई और चोर कैमरे आदि ले गए। तो मैंने उनसे कहा, कि वो विदेशी हैं आपके विषय में क्या सोचेंगे। छोटे-छोटे बच्चों ने ये कार्य किया था। मेरी बात को सुनकर

उन्होंने सब कुछ लौटा दिया। अतः विदेशी हमारे लिए सम्मानजनक होते हैं, प्रेम के योग्य। परन्तु पश्चिम में मैंने ये बात कहीं भी नहीं देखी। निःसंदेह सहजयोगी इस मामले में भिन्न हैं। पश्चिमी देशों में विदेशियों

पर शक किया जाता है। अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि ईसामसीह के देश में इस प्रकार का स्वभाव व संस्कृति कैसे आई! उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य तो प्रेम था। फिर क्यों उन्हें मानने वाले पश्चिमी देशों में इस प्रकार की संस्कृति प्रनपी, मैं नहीं समझ पाती। उनके सम्बन्धों की अभि-व्यक्ति में किसी को प्रेम करना

अपराध माना जाता है। अब आप लोग यहाँ आए हैं, आप सहजयोगी हैं, आप उन्हें ये सब सिखाएं। उन्हें केवल प्रेम एवं करुणामय ही नहीं होना विदेशों से आए लोगों की भावनाओं को भी समझना है। निर्धन देशों से आए लोगों की देखभाल भी करनी है। इस चीज का इतना प्रसार होना चाहिए कि हम निर्धन लोगों की सहायता में

जुट जाएं और कष्टों से धिरे लोगों को प्रेम करने लगे। ये गुण सभी विदेशियों में पनपना आवश्यक है, विशेष रूप से सहजयोगियों में कि वे उन लोगों के प्रति अपने हृदय में प्रेम विकसित करें जिनके पास वो सब कुछ नहीं है जो हमारे पास है। मैं आपको बताना चाहूँगी कि आस्ट्रिया से आई एक महिला से मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। वह यतीमखाना शुरू करना चाहती थी। कहने लगी, “श्रीमाताजी हमें भी अवश्य कुछ करना चाहिए।” मुझे बहुत प्रसन्नता हुई मैंने उससे कहा कि चिन्ता मत करो मैं तुम्हें सभी कुछ दूँगी। मैं तुम्हें भूमि दूँगी और भवन भी बना कर दूँगी तुम्हें केवल ये अनाथालय चलाना है। कहने लगी श्रीमाताजी हम तो इस कार्य के लिए 80 लाख रुपये एकत्र कर चुके हैं। हे परमात्मा, तुमने किस प्रकार इतना धन एकत्र कर लिया? सभी से ये धन एकत्र किया गया। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। अन्यथा लोग ईसाई

धर्म के प्रचार के लिए धन दिया करते थे। आपको केवल इसलिए लोगों की सहायता करनी चाहिए क्योंकि उन्हें सहायता की आवश्यकता है। हो सकता है कि अगले जन्म में आपको भी सहायता की आवश्यकता पड़े। अतः बेहतर होगा कि इस प्रकार की उदारता, प्रेम और सूझ-बूझ को अपना लें और सभी मानवीय समस्याओं को समझें। मैं आपको बताती हूँ कि हमारी सारी समस्याएं, विश्व की सभी समस्याएं, सच्चे प्रेम से सुलझाई जा सकती हैं। इन सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है चाहे ये भारत की समस्याएं हों या अन्य देशों की। केवल प्रेम की कमी है। अतः आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करें; आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके, चाहे इस बात को आप माने या न माने, आप प्रेम सागर में उतर जाएंगे।

परमात्मा आपको धन्य करे।

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## ENGLISH TALK

I have already spoken a lot about love. It is the loving capacity in India that I was referring to. On the whole they love you. Once you go to their house they entertain you with all hospitality. In India especially you go to a poor man's house. They will offer you milk still. Especially, the traditional people who still hold the culture are extremely loving! That is the reason why we are still surviving even after 300 years of British rule.

On the topic of foreigner, Shri Mataji said, Indians basically love people.

If I say you foreigner. It doesn't mean anything wrong. You are appreciated and Indians express their love. You are safe and secured. But if you are told as foreigner outside this country may be there you may be troubled or something wrong is expressed. Of course there was something in the past that happened. But as I told them. There were kids who stole cameras and other items. But when I told them they are foreigners they immediately returned the items.

You should also be kind and loving. All these should spread. We should come forward to help those who are not rich or are needy. I was extremely happy with an Austrian lady who told me Mother we are starting an orphanage. So I said, I would give you money assistance for land. But She said Mother we have already collected eighty lakhs for the same from Sahaja Yogis and also from outside. So that is the love and the understanding one should have within oneself. All the world problems can be resolved through love. That's why you must take your self-realization. You will all fall into the ocean of love.



# ENGLISH TRANSLATION

## (Hindi Talk)

I pay my respect to the seekers of truth who have gathered here today.

What is basically lacking everywhere is the Love. All persons take it as a mere word or expression. Love basically is the potential power within us. We do experience or feels it when we look at our Mother. What I am trying to say is that it is the Spirit enlightenment with in oneself. There is no discretion. It doesn't distinguish or is discrete between any animals or human. I sometime feel animals better understand the love. In fact the element of hatred should completely be finished from the human. Love is an ocean within and you find their tide within us. It is basically the power within us. By speaking of power one immediately takes it as something destructive state (Pralaya) but in fact it give us the inner peace. It is latent inside. It is covered inside. It is the power of love within ourselves that cleanse us and brings happiness and joy with in. If we see.....

We have enemies residing within ourselves in the form of Rakshasa, cession and pleasure like consumption of liquor or spending on women. This money always goes into spending in sinful lifestyle. But at times by giving it to others you can get so much joy. Next I find persons run after power and position. Why after power and position? One feels everyone should salute me! Why? It is this power that when one descends down they then repent. They feel that once people used to run after me when I was in power and now they even do not like to come near me. Once I asked a person why do you want to possess power and position? He said that he wanted to do good to the people. But you know no body cares for a person whose powers and positions are lost. For the entire life one is entangled with power and position. What does he achieve? A person who knows how to love gets the actual recognition. He witnesses all this shortcomings and rise and falls of life style and it does not affect him.

The third is the person who is pretends to be cleaver, like thieves who steals or robs or become imposter. Why are you doing this act? Who is going to respect you? These are basically the greed in and keep you away from yourself. A person is always remembered who gives love to all. May be he has not given money but he is remembered. He may not speak verses from Koran or Bibles or any thing but knows how to give love. so why coming out for waging war? Everywhere I hear he takes money ... he had taken (eaten...as in Hindi language) money. if that is the case why don't you eat money only? Once I saw a person is going and all others have covered their face and avoiding him. So I asked one what is the matter? He said Mother that man has taken (eaten) a lot of money through wrong practice and stinks. So, if we don't take care by covering ourselves we shall also be infected. Next, I find passion on wearing cloth. Putting on wrong cloth with fashion. You start giving explanations too. You fashion like that and then say Hanumanji also wore no cloth! But, why you are human being why do you want to be Hanuman. Once, Shri Krishna came down to Shri Mahavira while he was meditating. He asked for his cloth and Mahavira gave his entire cloth out of generosity. But, now see people these days they are building and erecting Statues of Mahavira portraying him nude. In the beginning Adam and Eve were without cloths. Then the serpent came up from the fruit they had. The serpent was the Kundalini. When they got the awakening they got the knowledge and covered themselves up to cover their nudity. I don't understand why there is so much of shamelessness. What is human? Why are they so much distracted? one should possess Lajja (Shame) it is basically the “Devi tattwa” within human being especially the ladies. It is an expression from within. You have two Chakras in the two shoulders. One in the left is “Shri Lalit Chakra” and the one on the right is a Shri “Shrichakra”. For ladies especially you must cover these two chakras and should not leave it open. I do not want to tell you what horrible disease you

contact. But in men however, it is not necessary while in ladies it is very sensitive and must cover the shoulders...then Speaking up on innocence Shri Mataji said... Once a young girl of 10 years asked after hearing from someone why someone had committed suicide? Just see what impact it really gives to the innocence of the child. It is the innocence within us that matters. Why such innocence is not within us? We are intellect of darkness! We are ignorant. How do you expect that you could give joy and bring happiness to the society? Now if you move around with garland in your neck and make people think that you are great human being... What is going to happen to others? The prime objective of life is to...

So today you have come here. You have also got your connection. You be happy. One may say Mother, I have experience this but, still I could not find happiness or peace within or for that matter Mother I have attained this but, I am yet to gain money in home. You have to leave all these....and get the connection! ...

Speaking on Ego Shri Mataji referred to a person... Once there was a gentle man came up to Me and said please save me. I could not recognize this diseased person at all. He was horrible with ego. Why then justify your ego's blunder .You actually go to a wrong path with ego.... Then She narrated another story ..... Once, I knew a person who was an erstwhile parliamentarian who died. After his death there were not even four persons available near him to carry his body. Even he had a dog that did not turn up at the last stage. Why this should happen? Only because he had ego problem with him. One should forsake his ego.